International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -8+9 Month – November+December 2017 pp. (07 – 12)

महामति प्राणनाथ के दर्शन पर भगवद्गीता का प्रभाव

जय प्रकाश शाक्य
विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग
शासकीय महाराजा महाविद्यालय,
छतरपुर (म.प्र.)

सार संक्षेप

महामति प्राणनाथ बहुमुखी प्रतिभा के धनी, उच्चकोटि के साहित्यकार, नीतिकार, कलाकार, प्रख्यात संगीतकार, गंभीर चिन्तक, समाज सुधारक, प्रणामी धर्म के प्रणेता, धर्म समन्वयक एवं उच्चकोटि के दार्शनिक थे। सामाजिक एवं धार्मिक सद्भाव के वे ध्वजवाहक थे। दार्शनिक क्षेत्र में वे परमधाम के पथ–प्रदर्शक थे। उन्होंने प्राचीन एवं अर्वाचीन, भारतीय एवं पाश्चात्य, नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक तथा पारलौकिक मान्यताओं में समन्वय एवं सामंजस्य स्थापित किया। वेद एवं कतेब, हामी एवं सामी, हिन्दू तथा अन्य धर्मों के बीच एकात्म समन्वय का अभिनव प्रयोग किया। धर्म समन्वय के वे एकमात्र ऐसे पुरोधा थे, जिन्होंने हिन्दुओं के वेद, उपनिषद, गीता आदि ग्रन्थों, इस्लामों के कुरान, मूसा पैगम्बर का जम्बूर दाऊद पैगम्बर का तौरेत और ईसा पैगम्बर का बाइबिल आदि के दार्शनिक, धार्मिक एवं नैतिक मान्यताओं की सर्वोत्तम व्याख्या कर उनमें एक ही ईश्वर के दर्शन किये और यह स्थापित करने की कोशिश की कि विश्व के सभी धर्मों का लक्ष्य एक ही है। उनकी दार्शनिक, धार्मिक एवं नैतिक मान्यतायें आज भी भटकी हुई मानवता का पथ प्रदर्शन करने में पूर्णतः सक्षम है तथा प्रासंगिक है।

महामति प्राणनाथ ने हामी और सामी दोनों प्रचलित परम्पराओं की समन्वित मान्यताओं को कुलजमस्वरूप या तारतमवाणी में अवतरित किया है। कुलजमस्वरूप में कुल चौदह ग्रंथ हैं। श्रीरास प्रकाश, षड्रुती, कलस, सनंध, खुलासा, खिलवत, परिक्रमा, सागर सिनगार, सिन्धी, मारफत सागर और क्यामतनामा है। गुजराती से हिन्दी में रूपान्तरण होने से प्रकाश और कलस हिन्दुस्तानी दो ग्रन्थ और जोड़े गये। इसी प्रकार क्यामतनामा छोटा और क्यामतनामा बड़ा आने के बाद ग्रंथों की कुल संख्या सत्रह हो गयी, जिनमें 524 प्रकरण तथा 1875,8 चौपाईयाँ है।

महामति प्राणनाथ के दर्शन का आधार वेदान्त गीता और भागवत है। वे 'खुलासा' नामक ग्रन्थ में बड़ी विनम्रता के साथ स्वीकार करते हैं कि –

वेदान्त गीता भागवत, दैयां इशारता सब खोल।
मगज मायने जाहेर किये, मोहे गुझ हते जो बोल।।
अंजीर जंबूर तौरेत चौथी जो फुरकत।
एक मायने गुझ थे जो जाहेर किये बाखान।।1

अर्थात वेदान्त गीता और भागवत के सभी गूढ़ रहस्यों के अर्थों एवं मन्तव्यों को तारतम वाणी से स्पष्ट किया गया है। निःसंदेह महामति प्राणनाथ की वाणी में गीता के दर्शन का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। विस्तारभय से मैं उन प्रसंगों का उल्लेख करना चाहूँगा जिनका तारतम वाणी में श्रीमद्भगवद् गीता का विस्तृत प्रभाव पड़ा है।

1. आत्मा की अवधारणा –

श्रीमद्भगवद् गीता के द्वितीय अध्याय में आत्मा के स्वरूप एवं आत्मा की अमरता की विवेचना की गई है। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं –

'य एनं वेन्ति हन्तारं यश्चैनं मन्येते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।।''[2]
न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणों न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।''[3]
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्त्यापों न शोषयति मारुतः।।[4]
अच्छेद्योऽयम दाहयोऽयम क्लेद्याऽशौष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाकुर चलोऽयं सनातन।।[5]

अर्थात् जो इस आत्मा को मारने वाला समझता है तथा इसको मरा मानता है वे दोनों ही नहीं जानते क्योंकि यह आत्मा न मारता है न मारा जाता है। यह आत्मा न किसी काल में जन्मता है न मरता है अथवा न यह आत्मा हो करके फिर होने वाला है क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है। शरीर के नाश होने पर भी यह नाश नहीं होता है। इस आत्मा को शस्त्रादि नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, जल गीला नहीं कर सकता और वायु सुखा नहीं सकती है। यह आत्मा अच्छेद्य है, अदाहय है, अक्लेद्य और अशोष्य है। यह आत्मा निःसंदेह नित्य, सर्वव्यापक अचल, स्थिर रहने वाला और सनातन है। यह आत्मा अव्यक्त, अचिन्त्य, विकाररहित, अजर, अमर और अविनाशी है।

महामति प्राणनाथ अपने दर्शन में आत्मा को एक अजर, अमर और अविनाशी मानते हैं जो गीता पर आधारित हे। वे आत्मा और परमात्मा के बीच अद्वैत भाव स्थापित करते हैं। श्रीरास में वे

Corresponding Author : email :

International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -8+9 Month – November+December 2017 pp. (07 – 12)

कहते हैं 'आपकी आत्मा एक'[6]' आतम सहुनी एकज दीसे जुजवी ते दीसे देह'[7] तथा 'आमे आतम सखियों एक।'[8] महामति प्राणनाथ तीन स्तरों से उतरी आत्माओं का वर्णन करते हैं (1) ब्रह्मसृष्टि या ब्रह्मात्मायें परमधाम से अवतरित होती है। ईश्वरीयसृष्टि अक्षर धाम से तथा जीवसृष्टि बैकुण्ठ से अवतरित होती है। सच्चिदानंद ब्रहम की बारह हजार कलायें ब्रह्मसृष्टिया ब्रह्मात्मायें कहलाती है। वे पर ब्रह्म परमात्मा के परमधाम की आनन्द लीला में मगन रहती हैं। महामति कहते हैं–

ब्रह्मसृष्टि आई अरस से, जीत इन्द्री सुध अंग।
छोड़ माहे वाहेर दृष्टि पर आतम धनी संग।।[9]
हम ब्रह्मसृष्ट आईं धाम से, अक्षर खेल देखन।
देख देखके जागिए, घर असलू अपने तन।।[10]

महामति कहते हैं – ''ब्रह्मसृष्टि वेद कतेव में, कहीं सो ब्रह्म समान''[11] अर्थात वेद और कतेब में ब्रह्मसृष्टि को ब्रह्म के समान माना गया है।

ईश्वरीयसृष्टि अक्षर ब्रह्म की सुरता स्वरूप कुमारिका सखियों को ही कहा जाता है। वे अक्षरधाम से अवतरित होती है ये तुरीय अवस्था में रहती है। वे अक्षरब्रह्म के प्रकाश से प्रकाशित है। ईश्वरीय सृष्टि में अनेक देवी देवता, परमहंस–ज्ञानीजन, साधु–सन्त, पीर–पैगम्बर और तपस्वीजन आते हैं। इन्हें मुक्तजीव या फरिश्ते कहा जाता है। महामति कहते हैं –

''और सृष्टि जो ईश्वरी, कही जाग्रत सृष्टि आतम।
सुबुध अंग करनी सुध, चले फरमान हुकुम।
एही सृष्टि आयी अरस से, आई अक्षर नूर ले जे।
मेहेर ले महबूब की, रहे तुरीय अवस्था में।।''[12]

जीवसृष्टि– जीवसृष्टि बैकुण्ठ से अवतरित होती है। जीवसृष्टि की आत्मा सूरत, भक्ति, तीनगुण और तीन पक्ष लेकर इक्यासी नश्वर पक्षों में उतरती–चढ़ती रहती है। जीवसृष्टि माया के बन्धन में बंधी रहती है। ये क्षर ब्रह्मण्ड को ही अपना विश्रान्ति स्थल मानती है। महामति प्राणनाथ कहते हैं –

''आतम इक्यासी पख हो, सब दुनियां में खेलत।
मोह अहं मूल इनको, बस याही बीच फिरत।
मोह अहं गुन की इन्द्रियां करे फैल पसु परवान।
फिरे अवस्था तीन में ए जीव सृष्ट पेहेचान।।
सुबुध निकट न आवहीं चले बेहेर दृष्ट।
आतम दृष्ट न लेवही, तो कहीं सुपन की सृष्ट।।
जाग्रत तरफ दुनीय की, सोवत सुपना ले।
देखत सुपना नींद से ए तीनों अवस्था जी के।।''[13]

इस प्रकार महामति प्राणनाथ ने ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीयसृष्टि और जीवसृष्टि तीन प्रकार की आत्मायें मानी है, जो क्रमशः परमधाम, अक्षरधाम और बैकुण्ठ से अवतरित होती है और पुनः निज धामों में वापस जाती है।

2. परमात्मा की अवधारणा– महामति प्राणनाथ ने अपने दर्शन कें क्षर, अक्षर और पर परब्रह्म की अवधारणा स्वीकार की है।वस्तुतः क्षर, अक्षर और परब्रह्म की अवधारणा पर भगवद्गीता का प्रभाव देखा जा सकता है। भगवद्गीता में परब्रह्म अक्षरब्रहम और पुरुषोत्तम तीन रूपों में परमात्मा का वर्णन किया गया है। गीता के आठवें अध्याय में अक्षरं परब्रह्मं परमं[14] अर्थात परम अक्षर अर्थात् जिसका कभी नाश न हो ऐसा सच्चिदानन्दधन परमात्मा तो ब्रह्म है तथा ''ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म'''[15] अर्थात् अक्षर रूप ब्रह्म का उल्लेख मिलता है। गीता के दशवें अध्याय में परमब्रह्म के स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखा है –

''परंब्रह्म परम धामं पवित्रं परमं भवान।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यादिदेवमजं विभुम।।''[16]

अर्थात् आप परमब्रह्म परमधाम और परम पवित्र है। आप आदिदेव, अजन्मा और सर्वव्यापी है। परमात्मा के पुरुषोत्तम रूप का वर्णन गीता के दशवें, ग्यारहवें तथा पन्द्रहवें अध्याय में किया गया है। गीता में कहा गया है कि –

''स्वमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम।
भूत भावन भूतेश देवदेव जगत्यते।।''[17]

अर्थात् भूतों के उत्पन्न करने वाले हे भूतों के ईश्वर! हे देवों के देव! हे जगत के स्वामी! हे पुरुषोत्तम आप स्वयं ही अपने आप को जानते हो। परमात्मा के पुरुषोत्तम रूप में ज्ञान ऐश्वर्य, शक्ति, बल, वीर्य और तेज ये षडैश्वर्य सदा सर्वदा विद्यमान रहते हैं। अर्जुन ने श्री कृष्ण से कहा ''द्रष्टुभिच्छामि ने रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम''[18] वस्तुतः पुरुषोत्तम रूप विश्वरूप परमात्मा है वह जगन्निवास सत् असत् चराचर जगत में व्याप्त है गीता में कहा गया है –

''यस्मात्क्षरमतीतोऽहम क्षरादपि चोत्तमः।
अतोऽस्मिलोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।।''[19]

अर्थात् मैं नाशवान जड़वर्ग क्षेत्र से तो सर्वथा अतीत हूँ और माया में स्थित अविनाशी जीवात्मा से भी उत्तम हूँ इसलिए लोक और वेद में भी पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ।
श्री कृष्ण आगे कहते हैं –

''यो मामेवमसंमूढ़ो जानति पुरुषोत्तम्।
स सर्वविदभ्जति मां सर्व भावेन भारत।।''[20]

हे भारत! इस प्रकार तत्व से जो ज्ञानी पुरुष मेरे को पुरुषोत्तम जानता है वह सर्वज्ञ पुरुष सब प्रकार से निरन्तर मुझे भजता है। इस प्रकार भगवद्गीता में परमात्मा को परब्रह्म, अक्षरबह्म और पुरुषोत्तम तीन रूपों में स्वीकार किया गया है।

महमति प्राणनाथ ने कुलजमस्वरूप में परमात्मा को अक्षरातीत या परब्रह्म, अक्षरबह्म एवं क्षर ब्रह्म तीन रूपों गीता दर्शन की तरह माना है।

Corresponding Author : email :

International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -8+9 Month – November+December 2017 pp. (07 – 12)

अक्षरातीत या परब्रह्म – महामति मानते हैं कि अक्षरातीत या परब्रह्म अद्वैत, अनन्त एवं अखण्ड सत्ता है। परब्रह्म परमात्मा निजधाम उनका तेज, प्रकाश उसने नूर का विकास तथा सत चित्त आनन्द अखण्ड गुणों से पूर्ण अद्वैत पूर्ण ब्रह्म का लीलाधाम है। वे राज राजेश्वर श्री राजजी हैं। अक्षरातीत या परब्रहम है। ऐश्वर्य आनन्द और संकल्प सिद्धि में अनन्त सामर्थ्य रखते हैं। स्वसंकल्प से एक से अनेक हो जाते हैं। ब्रह्मानन्द की रसानुभूति का अनुभव स्वलीलाद्वैत द्वारा कराते हैं। प्रणाली परम्परा में अक्षरातीत या परब्रहम युगलकिशोर श्रीकृष्ण को माना गया है। धामधनी अक्षरातीत परब्रह्म परमधाम में विराजमाना हैं। कविवर विशाल के शब्दों में –

''अक्षरधाम के पार है पूर्ण ब्रह्म का धाम।
सर्वोपरि तेहि जानियो, पारब्रह्म परधाम।।
धामधनी श्री अक्षरातीता। श्रीकृष्ण अरु शब्दातीता।।
श्यामा श्याम श्री जुगलकिशोर। सर्वेश्वर श्री राजकिशोर।।
राज स्वलीलाद्वैत बिहारी। परमधाम विहरत सुखकारी।।''[21]

इस प्रकार अक्षरातीत पूर्णब्रह्म शब्दातीत एवं सर्वातीत है –

अक्षरब्रह्म – अक्षरब्रह्म को चार विभूतियों से युक्त माना जाता है – मन का विस्तार सतस्वरूप में, बुद्धि केवल ब्रह्म में, चित केवल एवं सबलिक ब्रह्म एवं अहंकार अव्याकृत ब्रह्म स्वरूप में विस्तृत हो जाता है। सम्पूर्ण सृष्टि रचना अक्षरब्रह्म की कल्पना से रचित एवं विलीन हो जाती है। अक्षरब्रह्म परमब्रह्म अक्षरातीत की प्रकाश की एक किरण के समान है कविवर विशाल के शब्दों में

''तारतम्य बिन ब्रह्म के सकहि न लक्षण जान।
जो जनि अस ब्रह्म को, पहुँचे तेहि स्थान।।
कूटस्थ अक्षर ब्रह्म का, निर्मल चेतन रूप।
मन रूपक इस ब्रह्म को, लखो अतीत रूवरूप।।
महिमा अक्षर ब्रह्म की, अगम अगाध बखान।
फिर भी पूरन ब्रह्म के, एक किरण सम जान।।''[22]

क्षरब्रह्म – माया से युक्त संसार के अधिपति को क्षर पुरुष कहा जाता है। महामति प्राणनाथ क्षरपुरुष को आदिनारायण या महाविष्णु मानते हैं। वह अक्षर पुरुष की सत्ता में रहकर ब्रह्माण्ड का नियमन करते हैं और प्रलय की अवस्था में अक्षर ब्रह्म के चतुष्पाद अव्याकृत में लीन हो जाते हैं। वे संसार के स्वामी हैं।

इस प्रकार महामति प्राणनाथ अपनी वाणी में क्षर, अक्षर और पर ब्रह्म तीन रूपों में स्वीकार करते हैं जो भगवद्गीता में पुरुषोत्तम अक्षरब्रहम और पर ब्रह्म के समान हैं अतः कहा जा सकता है कि महामति प्राणनाथ द्वारा प्रवर्तित परमात्मा की अवधारणा गीतादर्शन से प्रभावित है।

3. स्वधर्म की अवधारणा – भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वधर्म के पालन का उपदेश दिया है। गीता में कहा गया है–

''श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मत्स्विनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः पर धर्मो भयावहः।।''[23]

अर्थात् रागद्वैव को जीतकर स्वधर्म का आचरण करो क्योंकि अच्छी प्रकार आचरण किय हुए दूसरे धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्म में मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय देने वाला है।

महामति प्राणनाथ ने भी स्वधर्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया है। उन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए आजीवन प्रयास किये। अनेक राजाओं को हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए प्रेरित किया। उन्होंने औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति का विरोध किया। अपनी धर्म यात्रा कें अन्त में महाराजा छत्रसाल मिले जिन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए मुगलों से अनेक युद्ध लड़े। महामति प्राणनाथ ने उन्हें हीरो और वीरों का आशीर्वाद दिया। छत्रसाल ने उन्हें अपना गुरू माना। प्रणामी सम्प्रदाय में महामति प्राणनाथ और छत्रसाल का वही स्थान है जो राम भक्तों के बीच श्रीराम और हनुमान का है। जहाँ–जहाँ प्राणनाथ की जयकार होती है वहाँ–वहाँ छत्रसाल की जयकार होती है। यह स्थान और सम्मान स्वधर्म की रक्षा और परधर्म की अस्वीकृति के कारण मिला है। महामति प्राणनाथ ने स्वधर्म की श्रेष्ठता और परधर्म की भयावहता को गीता से ग्रहण किया था।

4. अनन्यभक्तिभाव से अनन्यप्रेमलक्षणाभक्ति – भगवद्गीता में अनन्य भक्ति का उपदेश दिया गया है। गीता में श्री कृष्ण कहते हैं –

''वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिता।
वहवो ज्ञानतपसा पूता मदभावभागता।।''[24]

अर्थात् राग भय और क्रोध से रहित अनन्य भाव से मेरे में स्थित वाले मेरे शरण हुए बहुत से पुरुष ज्ञान रूप तप से पवित्र हुए मेरे स्वरूप को प्राप्त हो चुके है।

गीता के भक्ति योग में श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, वन्दन, अर्चन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन को नवधाभक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। आर्न्त, जिज्ञासु, अथार्थी और ज्ञानी चार प्रकार के भक्त होते हैं। भक्त को दृढ़निश्चयी, उद्वेगरहितं, कर्मफल त्यागी और निष्काम भाव वाला होना चाहिए। अनन्यभक्ति में भक्तों के समस्त भाव परमात्मा में केन्द्रित हो जाते हैं। मनबुद्धि सब परमात्मा में लय हो जाने पर अनन्य भक्ति का उदय होता है।

महामति प्राणनाथ ने अपनी वाणी में गीता के अनन्यभक्तिभाव को लेकर अनन्यप्रेमलक्षणाभक्ति का उपदेश दिया है। महामति के दर्शन में अनन्य प्रेमलक्षणा भक्ति को मोक्ष प्राप्ति का परम साधन माना गया है। पुरुष भाव से नहीं बल्कि नारी भाव का सम्पूर्ण समर्पण इस अनन्यप्रेमलक्षणाभक्ति है। महामति मानते हैं कि सखी भाव से पातिव्रत धर्म का पालन करते हुए प्रेमलक्षणा भक्ति द्वारा परमधाम के अखण्ड सुखों को प्राप्त किया जा सकता है। भक्तिमार्ग उपासक जिस सालोक्य, सारुप्य, सानुज्य और सायुज्य मुक्ति की बात करते हैं वह चारों प्रकार की मुक्ति अनन्यप्रेमलक्षणाभक्ति की चार दासी बन जाती है वह नवधा भक्ति से भी परे हैं नवरंगवाणी में कहा गया है –

प्रेमलक्षणा भक्ति को पेहेचानो रे कोई।
गाई ते महाविष्णु ने अखंडानंद सोई।

Corresponding Author : email :

International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -8+9 Month – November+December 2017 pp. (07 – 12)

नवधा ते न्यारी कहीं, प्रेम लक्षना जेही।
नाही पिंड ब्रह्मांड में, किन किए एही।।
नवधाभक्ति बैकुण्ठ लो मुक्त चार उदासी।
प्रेम लक्षणाभक्ति की, मुक्त चार है दासी।।

इस प्रकार महामति प्राणनाथ अनन्यप्रेमलक्षणाभक्ति को मोक्ष प्राप्ति का सर्वोच्च साधन निरूपित किया है।

5. परमधाम की अवधारणा – परमधाम का वर्णन करते हुए मुण्डकोपनिषद में कहा गया है –

''न तत्र सूर्यो भाँति ने चन्द्रतारकं, नेमा विद्युतोभान्तिकुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्व, तस्य मासा सर्वमिदं विभाति।।''[25]

महामति प्राणनाथ के दर्शन में परमधाम का विस्तृत वर्णन किया गया है। परमधाम के अवधारणा का भगवद्गीता में व्याख्या की गई है। गीता में कहा गया है –

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहः परमांगतिम।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम्।।[26]

वह जो अव्यक्त अक्षर, ऐसे कहा गया है। उसे ही अक्षर नामक अव्यक्त भाव को परमगति कहते हैं तथा जिस सनातन अव्यक्त भाव को प्राप्त होकर मनुष्य पीछे नहीं आता है। वह मेरा परमधाम है। ''न तदभासयते सूर्यो न शशांकों न पावकः।

तद्त्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम् ।।''[27]

अर्थात उस स्वयं प्रकाशमय परमपद को न सूर्य प्रकाशित कर सकता है। न चन्द्रमा और न अग्नि ही को प्रकाशित कर सकता है तथा जिस परमधाम को प्राप्त होकर मनुष्य पीछे संसार में नहीं आते वही मेरा परमधाम है। गीता में कहा गया है कि जिसने मान और मोह को जीत लिया है। आसक्ति रूप दोष जिनने और परमात्मा के स्वरूप में है जिनकी कामना नष्ट हो गई है। वे सुखदुख नामक द्वन्द्वों से मुक्त हुए ज्ञानीजन उस अविनाशी परमपद को प्राप्त होते हैं। गीता के शब्दों में –

''निमनिमोह जितसंगदोषा अध्यात्म नित्या विनिवृत्तकामा।
द्वन्द्वैर्विमुक्ता सुखदुख संज्ञैर्गच्छन्त्यमूढ़ा पदमव्ययं तत्।।''[28]

श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं कि –

''नित्रिधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतस्त्रयं त्यजेत।।
एवैर्विमुक्तः कोन्तेय तमो द्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरव्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परांमतिम्।''[29]

अर्थात् हे अर्जुन काम क्रोध तथा लोभ ये तीनो नरक के द्वार हैं ये आत्मा का नाश करने वाले हैं ये तीनों त्याग देना चाहिए। इन तीनों नरक के द्वारों से मुक्त हुआ अर्थात विकारों से छूटा हुआ पुरुष अपने कल्याण का आचरण करता है वह परमगति अर्थात मेरे को प्राप्त होता है।

गीता में परमधाम का उल्लेख अवश्य किया गया है लेकिन परमधाम का वर्णन नहीं मिलता है। महामति प्राणनाथ ने अपने दर्शन में परमधाम का विशद वर्णन किया है। उन्होंने कहा है कि अक्षरातीत परमब्रह्म परमात्मा श्री राज, श्यामा एवं ब्रहमात्माओं का निवास स्थल एवं स्वलीलाद्वैत परमब्रहम परमात्मा की दिव्य शोभा से परिपूर्ण स्वयं सिद्ध प्रकाशरूवरूप परमधाम सदा सर्वदा एकरस, नित्य, चेतन, अखण्ड सामग्री से युक्त अनंत है। यह परमात्मा सत् चित्त आनन्द अनन्त और अद्वैत इन पाँच भावों से परिपूर्ण है। महामति प्राणनाथ ने अपने कुलजमस्वरूप में परमधाम को अक्षरातीत धाम, शब्दातीतधाम, अखण्ड परमधाम, बेहद, चिन्मय ब्रह्माण्ड, अर्शेअजीम, मूलवतन, निजधाम तथा लीलाधाम आदि नामों से संबोधित किया है।

महामति प्राणनाथ के अनुसार परमधाम अखण्ड अनादि और अनन्त है। खिलवत में महामति कहते हैं–

'जित आदि अन्त न पाइए, तित तेहकीक होय क्यों कर'[30]

सिनगार में कहा गया है –

'अरस सबे है चेतन, हर चीज में सब गुन'[31]
'या पहाड़ या तिनका सो सब चीज आतम'[32]
'मौत उठा पैठे नहीं कायम अरस भुमान'[33]

महामति परिक्रमा में कहते हैं कि परमधाम ा सदा सर्वदा आनन्दमय हे।

'कहियत नेहेचल नाम, सदा सुखदाई धाम
साथ स्यामाजी श्याम बिलासत आठों जामरी''[34]

इस संसार के वैकुण्ठ, वैकुण्ठ के परे अक्षरधाम और अक्षरधाम के परे परमधाम है।

महामति कहते हैं कि परमधाम में सब कुछ दिव्य प्रकाश से प्रकाशित है। उन्होंने परमधाम के पच्चीस पक्षों का वर्णन किया है। ये रंगमहल, हौज कौसर ताल, कुंज, निकुंज, जवेरों की नहरें, मानिक पहाड़, पश्चिम की चौगान, बड़ा वन, पुखराज, पर्वत, सात घाटों से युक्त यमुना, आठ सागर, नूरसागर, नीरसागर, क्षीरसागर, दधिसागर, धृतसागर, मधुसागर, सुधारससागर तथा सर्वरस सागर, दो–दो महासागरों के बीच विशाल भूमि या जिसके आठखण्ड है। इस परमधाम में दस भौंम हैं। मूल मिलावा, भुलवनी, भोजन भूमि, नृत्यभूमि, शयनभूमि, सुखपाल भूमि, दो–दो हिंडोला की पंक्तियाँ, चार–चार हिंडोला की पंक्तियाँ, दूरलक्ष्या छज्जे एवं दसवीं चन्द्रभूमि आकाशी। परमधाम की आकाशी भूमि में ही रातों दिव्य लीला होती है। साधना में इन्हीं पच्चीस तत्वों का साधक ध्यान करके परमधाम के अखण्ड सुखों की अनुभूति करता है। परमधाम की प्रत्येक वस्तु परमब्रह्म अक्षरातीत के ही प्रकाश से प्रकाशित है। सभी परब्रह्म के नूर स्वरूप है। महामति के अनुसार परमधाम अविनाशी एकरस, आनन्दमय एवं तेजोमय है। तारतम्य ज्ञान से परमधाम का द्वार खुल सकता है।मानवजीवन का अंतिम लक्ष्य नश्वर जगत को छोड़कर परमधाम के अखण्ड सुखों को प्राप्त करना है।

महामति प्राणनाथ के कुलजमस्वरूप में आत्म धर्म पर स्वधर्म का अनन्यप्रेमलक्षणाभक्ति पर अनन्य भक्ति भाव का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। ज्ञानयोग भक्तियोग, कर्मयोग, निष्काम

Corresponding Author : email :

International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -8+9 Month – November+December 2017 pp. (07 – 12)

कर्मयोग, स्थिरबुद्धि, समत्वयोग आदि का प्रभाव महामति के चिन्तन मे दिखाई पड़ता है। गीता के उपदेशों का व्यापक प्रभाव किरन्तन, श्रीरास, प्रकाश गुजराती, कलश हिन्दुस्तानी, सागर खुलासा, खिलवत, सनंध, षडरुती, परिक्रमा आदि ग्रंथों में स्पष्टतः देखा जा सकता है। आत्मजाग्रति, जागनीदर्शन, सेवा, मेहेर या कृपा, मंत्रजाप एवं श्रीकृष्ण नाम महिमा चितवनी या ध्यान तथा अनन्यप्रेमलक्षणाभक्ति का प्रमुख आधार गीता दर्शन ही है। परमधाम के वर्णन में महामति प्राणनाथ मौलिकता खुलकर सामने आई है। अष्ट प्रहर की सेवा में संध्या के समय गौरी आरती के पूर्व सद्गुरू वन्दना में यह पद गाया जाता है –

''वेद थके ब्रह्मा थके, थक गये शेष महेश।
गीता को जहाँ गम नहीं, वह सतगुरू का देश।।''

संभवतः मुकुन्ददास की नवरंगवाणी का यह पद उसी परमधाम की ओर संकेत करता है जहाँ परमब्रह्म परमात्मा का निवास और अखण्ड सुखों का केन्द्र है। निष्कर्षतः हम कह सकते है कि महामति प्राणनाथ के चिन्तन में भगवद्गीता का व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है।

संदर्भ सूची :

1. खुलासा, प्रकरण 13 चौपाई 96–97
2. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –2 श्लोक 19
3. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –2 श्लोक 20
4. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –2 श्लोक 23
5. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –2 श्लोक 24
6. श्रीरास 47/87
7. श्रीरास 4/6
8. श्रीरास 33/3
9. किरन्तन 97/12
10. किरन्तन 96/8
11. किरन्तन 72/4
12. किरन्तन 79/10–11
13. किरन्तन 79/6–9
14. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –8 श्लोक 3
15. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –8 श्लोक 13
16. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –10 श्लोक 12
17. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –10 श्लोक 14
18. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –11 श्लोक 3
19. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –15 श्लोक 18
20. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –15 श्लोक 19
21. श्रीकृष्णान्दासागर, कविवर विशाल, द्वितीय सर्ग दशम तरंग पृष्ठ 127
22. श्रीकृष्णान्दासागर, कविवर विशाल, द्वितीय सर्ग दशम तरंग पृष्ठ 129
23. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –3 श्लोक 35
24. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –4 श्लोक 17
25. मुण्डकोपनिषद 2/2/10
26. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –8 श्लोक 21
27. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –15 श्लोक 6
28. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –15 श्लोक 5
29. श्रीमद्भगवदगीता अध्याय –16 श्लोक 21–22
30. खिलवत 16/28
31. सिनगार 1/13
32. सिनगार 1/36
33. सिनगार 16/8
34. परिक्रमा 42/1

Corresponding Author : email :